nwda.gov.in

यमुना संसद में निकलेगा दिल्ली की समस्या का समाधान

संजीव गुप्ता ● जागरण

नई दिल्ली : दिल्ली में मृतप्रायः यमुना को नवजीवन देने के लिए अब संत समाज भी एकजुट हो गया है। प्रमुख संत सरकार के साथ मिलकर इस कार्य में अपना योगदान देने के लिए तैयार हैं। जल्द ही इस दिशा में कुछ नई पहल भी देखने को मिल सकती हैं। गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश सरकार तथा गैर सरकारी संगठन आइ फारेस्ट द्वारा रविवार को प्रयागराज में 'कुंभ की आस्था और जलवायु परिवर्तन' विषयक एक दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया था। इसमें नेता-अधिकारी ही नहीं, विभिन्न संत भी जुटे। सम्मेलन में चर्चा के क्रम में राजधानी में यमुना की स्थिति पर भी चिंता जताई गई। राज्य के मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह ने भी स्वीकार किया कि दिल्ली में यमुना की दुर्गति का एक बड़ा कारण उसमें सीवरेज का गिरना है। वहीं परमार्थ निकेतन आश्रम के अध्यक्ष स्वामी चिदानंद सरस्वती ने जागरण से बातचीत में बताया कि जिस तरह से जलवायु परिवर्तन का असर बढ़ता जा रहा है, नदियों को बचाना बहुत जरूरी हो गया है। वरना सरस्वती नदी की तरह अन्य नदियां भी भविष्य में लुप्त हो सकती हैं, इसलिए संत, समाज, सरकार और संगठन सभी को आगे आकर समन्वित प्रयासों का हिस्सा बनना होगा।

आइटीओ पुल के पास यमुना किनारे से निकाली जा रही सिल्ट ● जागरण

- जल्द पहला आयोजन ऋषिकेश और दूसरा दिल्ली में कराने की तैयारी
- जुटेंगे संत, पर्यावरणविद व विज्ञानी, खोजेंगे नदी की सफाई के उपाय

उन्होंने बताया कि यमुना का 22 किमी का स्ट्रेच, जो दिल्ली में है, वह देश भर में इस नदी का सबसे अधिक प्रदूषित हिस्सा है। इसकी सफाई को लेकर राजनीति तो होती रही है, लेकिन ठोस प्रयास कभी नहीं हुआ। पहली बार उम्मीद बंध रही है कि दिल्ली में भी यमुना साफ हो सकती है। खुद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इसके लिए गंभीर हैं। इसके लिए संत समाज भी अपना योगदान करने के लिए तैयार है।

हाल में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिडला महाकुंभ में स्नान के लिए आए तो उनसे भी इस पर विस्तार से चर्चा हुई। उन्होंने यमुना संसद के आयोजन पर स्वीकृति दे दी है। पहली यमुना संसद ऋषिकेश में जबकि दूसरी दिल्ली में होगी। इस संसद में पर्यावरणविद, संत और विशेषज्ञ व विज्ञानी जुटेंगे। सभी दिल्ली की प्रदूषित यमुना को पुनर्जीवन देने के उपाय सुझाएंगे। सभी उपायों पर क्रियान्वयन का कार्य शुरू किया जाएगा। संत जन जागरूकता, सरकार आर्थिक और विशेषज्ञ - विज्ञानी तकनीकी स्तर पर कार्य योजना को अंजाम दिया जाएगा।